B.A.(P)-I HINDI-D UNIT 9

विषय:निराला (जागो फिर एक बार,'भिक्षुक', मैं अकेला)

1- विषय

2-विषय-क्षेत्र

3- विषय-प्रवेश

4- विषय-प्रतिपादन

5-विवेचन

6-निष्कर्ष

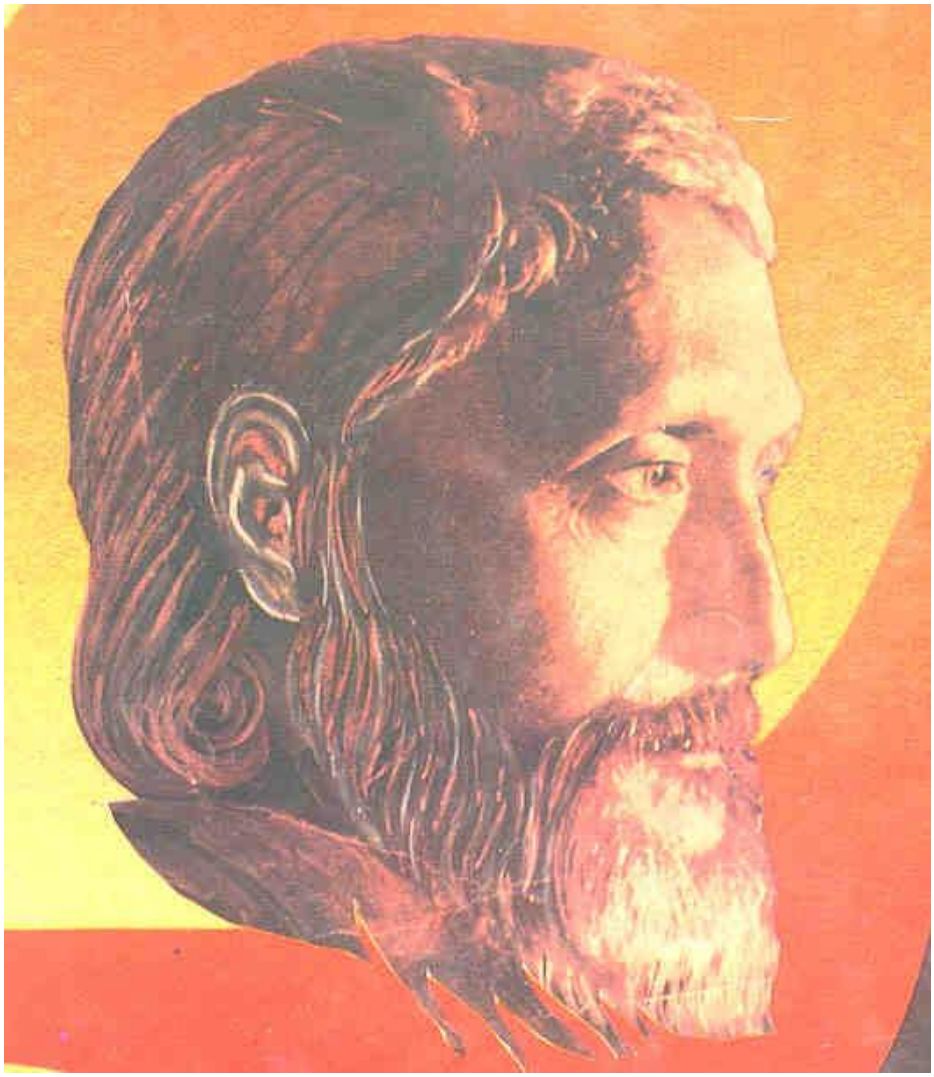

7- अभ्यास

8- रचनात्मक-प्रश्न

9-रचनात्मक योगदान

10-संदर्भ

2विषयक्षेत्र:

छायावाद की चतुष्टयी में महत्त्वपूर्ण स्थान रखने वाले, साहित्य साधना को जीवन का पर्याय मानने वाले 'निराला' क्रांतिधर्मी कृतित्व एवम् जीवटधर्मी व्यक्तित्व के स्वामी रहे। संस्कृति से निरन्तर संवाद करने वाले इस रचनाकार ने अपनी रचनात्मकता का परिचय साहित्य की समस्त विधाओं में कराया है। कभी सौन्दर्य के नये प्रतिमानों की रचना करके, कभी पुरातत्व नियमों के स्थान पर नई साहित्यशास्त्रीय मान्यताओं के निर्माण से, कभी प्रकृति के अद्भुत रूप की सराहना से, कभी हताशा व निराशा के वातवरण में भी गलत मानसिकता के प्रति विरोध प्रदर्शित करके निराला ने अपने समय व आने वाले समय की पहचान कराई है व भविष्य के संकेत भी दिए हैं।

'निराला' व्याकरणिक नियमों के विरुद्ध अपनी राह निर्मित करने वाले रचनाकार हैं। अतीत की समृद्ध परंपरा को वर्तमान की प्रेरणा भूमि बनाने वाले निराला ने प्रेम, सौन्दर्य, प्रकृति, समाज, व्यक्ति और परम्परा के द्वन्द्व, हृदय की अनुभूति और विद्रोह को कविता का विषय बनाया है।

स्नेह निर्झर बह गया है
रेत सा तन रह गया है।

आग की यह डाल जो सूखी दिखी,
कह रही है – अब यहां पिक या शिखी,
नहीं आते पंक्ति में वह हूं लिखी,
नहीं जिसका अर्थ–
जीवन दह गया है।

दिये हैं मैंने जगत को फूल–फल,
किया है अपनी प्रभा से चकित चल,
पर अनश्वर था सकल पल्लवित पल,
ठाट जीवन का वही–
जो ढह गया है।

अब नही आती पुलिन पर प्रियतमा,
श्याम तृण पर बैठने को निरुपमा,
बह रही है हृदय पर केवल अमा;
मैं अलक्षित हूं, यही
कवि कह गया है।

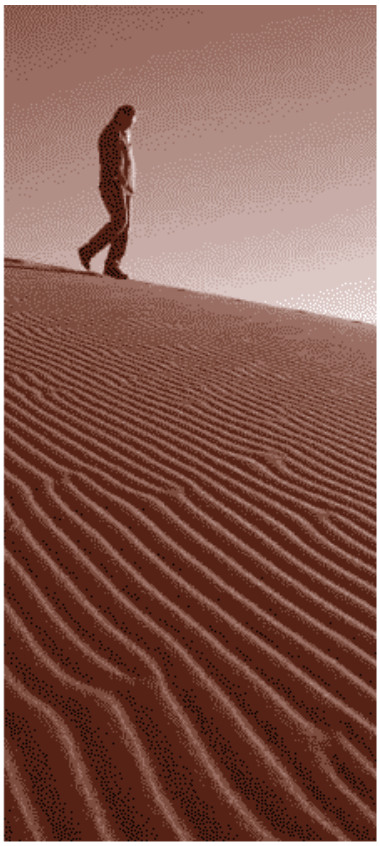

शब्दार्थः

निर्झर झरना	दह गया जल गया
पिक कोयल	पल्लवित हरा भरा
शिखी मोर	पुलिन नदी किनारे की घास
अनश्वर अविनाशी	अमा अमावस्या

जीवन परिचय:-

'निराला' का जन्म 24 फरवरी 1899 को महिषादल (बंगाल) में हुआ। इनके पिता 'गढ़ाकोला' के मूल निवासी थे। अत: निराला के संस्कार दोनों स्थानों से निर्मित हुए। ढाई वर्ष की आयु में माता की मृत्यु के

पश्चात् पिता के साथ महिषादल में रहे। ग्यारह वर्ष की पत्नी मनोरमा और चौदह वर्ष के निराला ने अपने गार्हस्थय जीवन का आरम्भ किया परन्तु पत्नी का अधिकांश जीवन मायके में ही बीता। विवाह के सातवें वर्ष में ही इनकी पत्नी का देहान्त हो गया। पत्नी के रूप, सौन्दर्य, स्मृति की अनेक रेखाएँ इनकी रचनाओं में देखी जा सकती हैं।

निराला का मूल नाम सूर्यकुमार त्रिपाठी था जिसे बदलकर उन्होंने स्वयं सूर्यकांत कर दिया। अपनी पत्नी से इन्हें दो संताने प्राप्त हुईं- रामकृष्ण और सरोज। सरोज के विवाह के समय निराला ने अनेक पुरातन मान्यताओं को तोड़ा जिसके कारण स्वयं उनके परिवार से भी उन्हें विरोध सहना पडा।

सरोज के विवाह मे अनेक पुरातन मान्यताओं को तोड़ने के बाद भी सरोज की आयु बहुत लम्बी न हो सकी। निराला के जीवन का यह समबसे कठिन समय था। लम्बी बीमारी के पश्चात् सरोज की मृत्यु हो गई। निराला ने 'सरोज-स्मृति' में सरोज और अपने जीवन की व्यथा-कथा लम्बी कविता के रूप में प्रस्तुत की। इसे हिन्दी कविता का सबसे करूण 'शोक-गीत' भी माना गया है।

निराला का समस्त जीवन संघर्षों से पूर्ण रहा। कभी रचनात्मकता के स्वीकार का संघर्ष, कभी मुक्त छन्द के प्रयोग पर आलोचकों की टिप्पणियाँ और इसके साथ निरन्तर चलता आर्थिक संघर्ष तो रहा ही।

विचारधारा:-

'निराला' अपने नाम के अनुरूप ही निराले व्यक्तित्व-कृतित्व के स्वामी थे। निराला यूँ तो छायावादी रचनाकार थे परन्तु इनकी रचनाएँ सर्वदा छायावाद का अतिक्रमण करते दिखाई देती है। निराला ने स्वाधीनता संघर्ष व छायावाद को जोड़ा। निराला की विचारधारा के निर्माण में रामकृष्ण परमहंस, विवेकानन्द की वाणी, बंकिमचन्द्र, रवीन्द्र नाथ टैगोर की रचनाओं का महत्वपूर्ण योगदान है।

निराला ने आरम्भ में प्रेम की कविताएँ लिखी। प्रेम की कविताओं में स्थूलता भी है व सूक्ष्मता भी। 'जुही की कली--------' प्रकृति के उपादानों के माध्यम से प्रेम की सूक्ष्मता को उभारती है पर निराला का मूल स्वर यहाँ भी मुक्त छन्द का प्रवर्तन तथा खड़ी बोली के माधुर्य की स्थापना करना रहा है।

निराला की समस्त विचारधारा का मूल बिन्दु है- यथार्थ व संघर्ष। यथार्थ को व्यंग्य के साथ सम्मिलित करके उन्होंने छायावाद का अतिक्रमण करके प्रगतिवाद की भूमि का संस्पर्श किया। 1941 में कुकुरमुत्ता के माध्यम से इन्होंने पूँजीवादी एवम् साम्राज्यवादी मानसिकता का विरोध किया। निराला पुरातन, जड़ीभूत मूल्यों को नष्ट करके नए समाज के निर्माण का स्वप्न देखते हैं जहाँ समाज के उपेक्षित वर्ग को भी अधिकार मिल सकेंगे।

निराला के काव्य का विकास प्रगतिवाद के पश्चात् आध्यात्मिक विचारधारा की ओर होता है। रामकृष्ण परमहंस व विवेकानन्द के विचारों से प्रभावित व्यक्तिगत जीवन में निराशा की ओर उन्मुख होते निराला लम्बे समय तक सन्यासी के वेश में रहे। प्रार्थना गीतों में इनके हृदय का समर्पण उस अव्यक्त प्रभु के लिए हुआ है, जो अपनी शरण में लेकर निराला को 'जीवन के विपुल व्याल' से मुक्त

करने में सक्षम है-

"दुरित दूर करो नाथ। अशरण हूँ गहो हाथ----------।"

निराला के काव्य का सबसे सुन्दर और विशिष्ट अंश है- उनकी छायावादी काल में रचित रचनाएँ। कहीं मैं शैली में वर्णन, कहीं संध्या-सुन्दरी के सौन्दर्य का निदर्शन कहीं वसन्त के आगमन के प्रति उत्कंठा, कहीं पंचवटी प्रसंग में राम के माध्यम से प्रेम की नि:सीम भूमि का संस्पर्श तो कहीं 'तुलसीदास' के माध्यम से आत्मसंघर्ष तो कहीं शक्ति की मौलिक कल्पना करते हुए निराला विभिन्न रूपों में काव्य रचना करते दिखाई देते हैं।

3-विषय प्रवेश:-

निराला की रचनाधर्मिता:-

निराला की रचनाधर्मिता का निर्माण चेतना एवं संघर्ष के माध्यम से हुआ है। स्वाधीनता, प्रकृति प्रेम, आत्मसंघर्ष, निरन्तर संघर्ष में भी जिजीविषा इनके काव्य के विषय है। जीवन की कठोर वास्तविकताओं से परिचित निराला के काव्य में प्रकृति और प्रेम के सौन्दर्य के अद्भुत चीज मिलते हैं, वहीं शक्ति की मौलिक कल्पना भी दिखाई देती है जहाँ शक्ति निरन्तर करने वाले मानव के हित हेतु साधन बनने के लिए प्रस्तुत हो जाती है।

शक्ति की यही मौलिकता निराला की रचनाधर्मिता की भूमि है। निराला सभी अर्थों में 'निराले' हैं। अपने काव्य के माध्यम से उन्होंने हर पुरातन, बंधी-बंधाई जमीन को तोड़ा एवं मौलिक, नवीन कल्पना की सृष्टि की। चाहे वह द्विवेदी युग का स्थूल सौन्दर्य बोध हो, चाहे आगे चलकर छायावाद की अति कल्पना दोनों के प्रति विद्रोह करके उन्होंने सृजन की नवीन भूमि का निर्माण किया।

अपनी पुत्री की सेज स्वयं निर्मित करने और कहने वाले निराला हों अथवा तुलसीदास के व्यक्तित्व के माध्यम से अपनी ही पड़ताल करने वाले निराला हों, प्रत्येक स्थान पर उनकी रचनात्मकता स्पष्ट दिखाई देती है। कुकुरमुत्ते के माध्यम से गर्वोक्ति का भान कराने वाले रचनाकार हो अथवा 'भिक्षुक' के साथ अपनी समस्त संवेदनाओं को समर्पित करने वाली रचना निराला की रचनाधर्मिता प्रत्येक बार पूर्ण

उद्घोष के साथ प्रकट होती है।

निराला का समस्त साहित्य प्रेम व संघर्ष का साहित्य है जिसे यथार्थ एवं व्यंग्य का सहारा मिलता रहा है। उनका यह साहित्य जन-मन के समर्थन में सदैव खड़ा है फिर चाहे स्वाधीनता के उद्घोष के माध्यम से चाहे प्रकृति अथवा सर्वहारा के प्रति समर्पण भाव से पर सदैव उनकी रचनात्मकता जन-मन से जुड़कर संघर्ष से ही अपनी शक्ति जुटाती रही है।

रचनाएँ:-

काव्य संग्रह: अनामिका, परिमल, गीतिका, तुलसीदास, कुकुरमुत्ता, सरोजस्मृति, अणिमा, बेला, नये पत्ते, अर्चना, आराधना, गीतगुँज, सांध्यकाकली (अंतिम)

उपन्यास: अलका, अप्सरा, निरूपमा, प्रभावती, कुल्ली भाट, काले-कारनामे।

आलोचना: रवीन्द्रनाथ कविता-कानन, प्रबंध पद्म, प्रबंध प्रतिमा, चाबुक।

कहानी: लिली, सखी, सुकुल की बीवी, चतुरी चमार।

बालसाहित्य: भक्तध्रुव, भक्त प्रहलाद, भीष्म, महाराणा प्रताप, सीख भरी कहानियाँ।

पत्रकारिता: मतवाला, सुधा, समन्वय।

निराला की प्रथम रचना 'जुही की कली' को सरस्वती में छपने के लिए भेजा गया परन्तु 'सरस्वती संपादक' ने उसे महत्वहीन मानकर लौटा दिया। वही निराला आगे युग प्रवर्तक बने। दूधनाथ सिंह 'निराला: आत्महन्ता आस्था' में लिखते हैं कि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की कुल प्रकाशित मौलिक कविताओं की संख्या 686 है। निराला की रचनाएँ कालजयी है। काल के बिन्दु पर खड़े होकर काल को उन्होने चुनौती दी है।

संकलित रचनाओं के संग्रहों का परिचय:-

निराला कवि होने के साथ-साथ पत्रकार एवं आलोचक भी थे। सूक्ष्म पर्यवेक्षण शक्ति, सामाजिक-सांस्कृतिक विषयों के विवेचन व चिन्तन के माध्यम से उन्होंने अपनी रचनाओं का निर्माण किया। निराला ने आधुनिक व्यवस्था के खोखलेपन की ओर इंगित करते हुए प्राचीन व्यवस्था के चित्र भी प्रस्तुत किए, उससे प्रेरणा लेने का आग्रह भी किया व भविष्य की आहटों का संकेत भी दिया।

इस खण्ड में निराला की तीन कविताएँ **-भिक्षुक, मैं अकेला, जागो फिर एक बार**।

'जागो फिर एक बार-------' कविता 'परिमल' संग्रह से ली गई है। इसका प्रकाशन 1929 में हुआ। 'परिमल' की भूमिका में निराला ने कविता की मुक्ति को मनुष्यों की मुक्ति के समान आवश्यक माना। निराला कहते हैं - "मनुष्यों की मुक्ति की तरह कविता की भी मुक्ति होती है। मनुष्यों की मुक्ति कर्मों के बंधन से छुटकारा पाना है और कविता की मुक्ति छंदों के शासन से अलग हो जाना------।"

'परिमल' का महत्त्व विविध प्रकार की क्रान्तियों के शुभारम्भ के लिए भी है और भाव, भाषा, छन्द, प्रेम, सौन्दर्य के क्षेत्र में नवीनता की दृष्टि से भी। 'जुही की कली' में प्रेम के उदय की सघनतम

अवस्था, प्रकृति और प्रेम के रागात्मक सम्बन्ध, प्रेम क्रीड़ा, लौकिक में अलौकिक प्रेम की अनुभूति के साथ-साथ मुक्तछन्द के माध्यम से छन्दों के संसार में मुक्ति का उद्घोष किया गया है।

महाराजा शिवाजी का पत्र, जागो फ़िर एक बार, पंचवटी प्रसंग, प्रलय की छाया, दूत, अलि, ऋतुपति के आए वसंत, यमुना के प्रति, प्रभाती, जल्द के प्रति, तुम और मैं, भिक्षुक विधवा, बादल राग (छः भागों में विभाजित) आदि प्रमुख कविताएँ हैं जो परिमल में संकलित हैं।

बाँधो न नाव इस ठाँव बन्धु!
पूछेगा सारा गाँव बन्धु!

यह घाट वही जिस पर हँस कर,
वह कभी नहाती थी धँस कर,
आंखें रह जाती थीं फँस कर,
कंपते थे दोनो पाँव बन्धु!

बाँधो न नाव इस ठाँव बन्धु!
पूछेगा सारा गाँव बन्धु!

वह हँसी बहुत कुछ कहती थी,
फिर भी अपने में रहती थी,
सबकी सुनती थी सहती थी,
देती थी सबके दाँव बन्धु!

बाँधो न नाव इस ठाँव बन्धु!

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला

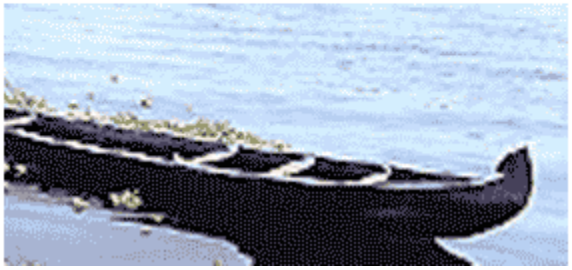

परिमल वैयक्तिक सी लगने वाली ‘प्रिया के प्रति----’ भावनाओं को समर्पित रचना है, वही दूसरी ओर

प्रकृति के विविध उपादानों के साथ तादात्म्य की चेष्टा करती अनेक भावानुभूतियों के बिम्ब हैं । वसन्त के आगमन की प्रतीक्षा और वसन्त आगमन के पश्चात् की सी सुखद अनुभूतियों के दृश्य-बिम्ब यहाँ उपस्थित है।

विविध '-----के प्रति' प्रगीतों में निराला ने बुद्धि व भावना का अद्भुत संयोग किया है। 'यमुना' के माध्यम से रीतिकालीन मानसिकता का तिरस्कार करते हुए यमुना के उदात्त भाव रूप को निराला ने प्रस्तुत किया है।

निराला ने इस संग्रह के अन्तर्गत 'तुम और मैं' जैसी दार्शनिक चिंतन की कविताएँ भी हैं जिसमें उनके अद्वैतवादी दर्शन का स्पष्ट स्वरुप दिखाई देता है। इस संग्रह का महत्व इस दृष्टि से भी है कि इसमें सामाजिक महत्व की रचनाएँ भी साधारण समाज को केन्द्र में रखकर पर्याप्त मात्रा में लिखी गई है। निराला की प्रगतिशीलता यहाँ स्पष्ट दिखाई देती है। 'भिक्षुक' ऐसी ही कविता है।

"अणिमा" (1943) संग्रह से 'मैं अकेला -------' कविता ली गई है। इस संग्रह में निराला द्वारा रचित चवालीस कविताओं का संकलन है यथा - नुपुर के सुर जब मन्द रहे, बादल छाये, जनजन के जीवन के सुन्दर, इन चरणों में दो मुझे शरण, सुन्दर हे सुन्दर, दलित जन पर करो करुणा आदि। प्रार्थनापरक गीतों, कविताओं का इनमें संग्रह अधिक है। कवि की पीड़ा भरी वाणी यहाँ अपने चरम पर ईश्वर के प्रति समर्पित होती दिखाई देती है पर यहाँ भी पीड़ा मात्र व्यक्तिगत न होकर सामूहिक है। निराला ने भीख माँगने वाले का चित्र प्रस्तुत किया है परन्तु वह भिखारी भी ईश्वर के प्रति समर्पित हैं। यहाँ निराला क्रोध नहीं करते, विवशता भी नहीं दर्शाते। भिक्षुक के समान अपनी समस्त शक्ति उसे समर्पित भी नहीं करते बल्कि ईश्वर की मौन करुणा का सहारा चाहते हैं-

तुम्हें चाहते है वह, सुन्दर
जो द्वार-द्वार फिर कर
भीख मांगता कर फैलाकर

4-विषय प्रतिपादन:-

निराला के काव्य में रचनात्मकता के अनेक स्तर दीख पड़ते हैं। कहीं तेजस्विता, तो कहीं आत्मीयता, कहीं आत्म-साक्षात्कार तो कहीं आत्म के माध्यम से जगत की प्रतीति कराने वाले निराला के काव्य में अनेक अनुगूंजे सुनाई देती है। निराला के काव्य में अनेक अनुगूंजे सुनाई देती है। निराला के काव्य में उनके निजत्व की अभिव्यक्ति के साथ-साथ स्वाधीनता चेतना की स्पष्ट अभिव्यक्ति दिखाई देती है। असहाय हाथों को सहारा देती उनकी करुणा तो कहीं करुणा मिश्रित गर्व भी झलकता है।

भिक्षुक कविता में निराला उस उपेक्षित वर्ग को अपनी समस्त करुणा समर्पित करते हैं जिन्हें

समाज व्यक्ति मानने की भी इच्छा नहीं रखता। निराला यहाँ एक भिक्षुक का बिम्ब प्रस्तुत करते हैं जो असहाय, जर्जर, टूटा-हारा है। भोजन की अनुपलब्धता, समाज की उपेक्षा और उसके बीच भी जीवित बने रहने की जिजीविषा को टटोलता यह भिक्षुक निराला की दृष्टि का केन्द्र बनाता है। निराला उसकी इस स्थिति को देखकर विक्षुब्ध हैं। एक ओर पूँजीपति वर्ग की आकाशचुम्बी अट्टालिकाएँ दूसरी ओर भोजन तक न मयस्सर हो पाने की स्थिति कवि को आक्रोशित करती है।

स्थिति मात्र इतनी ही नहीं इससे कहीं अधिक भयावह है। भिक्षुक के साथ "दो बच्चे भी हैं सदा हाथ

फैलाये-----"। भविष्य की भयावहता और कुरुपता अतीत होते भिक्षुक में दिखाई दे रही है जो अधिक आतंकित करती है। यहाँ कवि ही अपनी करुणा का समर्पण नहीं करत पाठक भी उसके साथ अपने जीवन अमृत में से कुछ बूंद उसे समर्पित करने का साहस जुटा ही लेता है।

मैं अकेला:- निराला का काव्य आत्मसंघर्ष का है। संसार से लेकर निज मन तक एक संघर्ष उनके साथ निरन्तर चलता रहा है। निराला ने आर्थिक विपन्नता के बीच अपनी साहित्यिक रचनात्मकता को सदैव ऊर्जस्वित रखा, रूढ़िवादी मान्यताओं का विरोध किया। समाज के बंधे-बंधाए नियमों के स्थान पर नये समाज की कल्पना की जहाँ मानव मात्र का विकास हो सकेगा।इन्होंने जातिगत बंधनों का भी विरोध किया परन्तु एक समय ऐसा आया जब निराला को यह अनुभव हुआ कि वे कतई अकेले पड़ गए हैं। यह अकेलापन इसलिए नहीं था कि वह अपनी अंतिम अवस्था की ओर बढ़ रहे थे बल्कि इसलिए था क्योंकि उनसे सभी धीरे-धीरे दूर जा रहे थे। संसार का मेला अपने आनंद में मग्न था और आनंद की निर्मल धार के स्रोत को लोग भूला चुके थे.

जागो फिर एक बार:-

निराला का काव्य मुक्ति की आकांक्षा का काव्य है। वैयक्तिक मुक्ति से लेकर राजनीतिक मुक्ति की माँग इनके काव्य की विषयवस्तु बनकर आई है. पराधीनता के कारण राष्ट्र के ंगौरव पर लगने वाली क्षति की पूर्ति का एकमात्र विकल्प है-स्वतन्त्रता। निराला का युवाओं को सीधा सम्बोधन है- इस रचना में।

पराधीनता से मुक्ति के लिए संघर्ष अनिवार्य है। देश के प्राचीन गौरव की सुधि दिलाते हुए निराला अश्रु पूरित नेत्रों के धुंधलके को दूर करके नवीन ऊर्जा भरने का आह्वान करते हैं। गुरू गोविन्द सिंह की झलक दिखलाते हुए वह सिंह के समान शक्तिवान जाति को अपनी पहचान का स्मरण कराने का प्रयास करते हैं। देश के स्वातन्त्र्य के साथ-साथ विश्व में मानवतावाद के प्रसार के लिए निराला युवकों को उद्‌बोधन देते हैं।

निराला ने राष्ट्र के आध्यात्मिक और सांस्कृतिक स्वरूप को प्रकृति व इतिहास के वैभव के साथ संयुक्त किया है और नवजागरण की माँग की है।

संवेदना/प्रतिपाद्य:-

निराला छायावाद के सौन्दर्य बोध, सूक्ष्मबोध, कल्पना, प्रकृति के रचनाकार होने के साथ -साथ सामाजिक चेतना, स्वातंत्र्य बोध, क्रांति और विद्रोह एक साथ मिलते हैं। वैयक्तिक निराशा से आध्यात्मिकता तक की यात्रा, जीवन से अगाध प्रेम और कभी अपनों से बिछुड़ने की असाध्य पीड़ा एक साथ रचनाकार के काव्य में मूर्त हो उठती है। निराला का समस्त काव्य विरोधी स्वरों से बुना है पर सबका बुनियादी स्वर एक ही है- मुक्ति की आकांक्षा। ऐसी ही मुक्ति की आकांक्षा इस खण्ड की कविताओं में दिखाई देती है।

"जागो फिर एक बार---------" कविता निराला का उद्‌बोधन गीत है। मुक्त छन्द में प्राकृतिक माधयमों से निराल जागृति का प्रयास करते हैं। कविता दो खण्डों में रचित है। प्रथम खण्ड में कवि प्रभात की अरुणिमा का संकेत करता है। सूर्य अपना द्‌वार खोलकर प्रभात का स्वागत करता है। प्रभात अलस नेत्रों को खोलकर जागृत होने की प्रेरणा देता है। यह प्रभात दैनन्दिन आने वाले प्रभात के समान मात्र व्यक्ति को जागकर अपने कार्य पर जाने के लिए ही तैयार नहीं करता बल्कि वास्तविक कर्मभूमि में उतरने की प्रेरणा देता है। वास्तविक कर्मभूमि है- स्वातन्त्र्य की बलिवेदी जिस पर प्राण देने के लिए प्रकृति भी युवा वर्ग का आह्‌वान करती है।

मात्र प्रभात ही प्रेरित नहीं करता बल्कि अस्ताचल की ओर जाता सूर्य, यामिनी-गंधा भी जगकर यौवन की शक्ति को जगाती है। चकोर जिस प्रकार चन्द्रमा को एक टक देखता हे, प्राप्त्याशा करता है उसी प्रकार युवाओं को भी निरन्तर स्वाधीनता पर दृष्टि रखनी चाहिए।

कवि एक रूपक बुनता है जहाँ व्यक्ति का वेश, उसका स्वरूप ऐसा हो जिससे स्वप्न में भी जागृति का आभास हो सके। बाँहें भले ही शिथिल प्रतीत हो पर कल्पना में सदैव स्वाधीनता रूपी देवी की झलक होनी चाहिए। प्रकृति के निरन्तर परिवर्तित होने पर समय के विस्तार की सूचना मिलती हैं। कवि उद्‌बोधन देता है कि समय का चक्र बीत रहा है अत: अब तो जागृति अवश्य होनी चाहिए।

प्रकृति के उपादान जागृति का प्रयास करके थक गए परन्तु सुषुप्त भारतीयों की निंद्रा नहीं टूटी। दूसरे खण्ड में कवि गुरू गोविन्द सिंह की ऐतिहासिक वीरता का उदाहरण देकर भारतीयों को उनके समृद्‌ध अतीत की स्मृति दिलाता है। 'शेरों की माँद में आया है फिर स्यार----------' कहकर कवि सिंह के समान शक्तिवान जाति को उसकी शक्ति का स्मरण कराता है। जिस देश में गुरू गोविन्द सिंह के समान अपनी संतानों के प्राणार्पण करने वाले वीर योद्‌धा रहे हों उस देश में इतनी अशक्तता देखकर कवि आश्चर्य चकित होता है।

'सत् श्री अकाल' का उद्‌घोष करने वाले गुरू गोविन्द सिंह जब वीरों की अगुवाई करने गए तो काल भी उनसे डर गया। उन्होंने प्राणों की बलि चढ़ाने को तैयार वीरों को 'अमृत संतान' का दर्जा दिया।

निराला उस 'अमृत संतान' को उसका प्राचीन गौरव याद दिलाने हैं।

'सहस्त्रार' तक पहुँचने के लिए कबीर की वाणी में "जो घर जारे आपनो चलें हमारे साथ' की शक्ति होना आवश्यक है। निराला उदाहरण देते हुए कहते हैं कि दुर्बल व्यक्ति और साहस में कोई सह-सम्बन्ध नहीं है परन्तु सिंहनी की गोद से शावक छीनने का स्वप्न देखना भी असंभव है। निराला गीता के कर्मयोग कि याद दिलाते है कि योग्य व्यक्ति ही वास्तविक अधिकारी होता है। पश्चिम ने जिस कर्मयोग को भारत से सीखा, आज भारत स्वयं उस उक्ति को कैसे भूल गया।

संतों की वाणी जिस देश में सदैव 'कर्म' 'शक्ति' 'साहस' का उपदेश देती रही उस देश की संतान दीन, कायर, कामपरक होकर सुप्त रह जाए तो यह 'निराला' को स्वीकार नहीं। निराला वीर पुत्रों को 'ब्रह्म' की संज्ञा देते हैं। 'दिनकर' की पंक्तियाँ सहसा मन में कौंध जाती है।-

क्षमा शोभती उस भुजंग को, जिसके पास गरल हो।
उसको क्या जो दंतहीन, विषहीन, विनीत, सरल हो।।(कुरूक्षेत्र)

प्राकृतिक और भौतिक जगत के उपादानों के माध्यम से निराला भारतीयों के भीतर प्रतिरोध क्षमता विकसित करने का प्रयास करते हैं तथा साधु-संतों की संन्यासी वृत्ति के पीछे छिपी क्रान्तिधर्मिता के माध्यम से भारतीयों को निष्क्रियता त्यागने का संदेश देते हैं।

निराला स्वाधीन वृत्ति की चेतना भीतर भरकर प्रत्येक युग के युवक को राष्ट्रीयता की रक्षा करने का संदेश इस कविता के माध्यम से देते हैं।

भिक्षुक: (प्रतिपाद्य/संवेदना)

निराला ने धर्म की व्याख्या करते हुए एक स्थान पर लिखा- "वीरों, छोटों को अपने बराबर कर लेने से बड़ा धर्म और कौन सा है? जो बड़ा है। जो स्वयं छोटा है, वह क्या करेगा? ----------सस्वर से कहिए कि आप उतनी ही मर्यादा रखते है जितनी आपका नीच से नीच पड़ोसी, चमार या भंगी रखता है।" [निराला की साहित्य साधना (भाग 1) रामविलास शर्मा पृ० 213-214]

धर्म की इस व्याख्या को मानने और स्वीकार करने वाले निराला ने अपना समस्त जीवन नीच, अछूत, साधारण, हीन कहे जाने वाले लोगों को समर्पित कर दिया. निराला 'ब्राह्मण समाज में ज्यों अछूत' रहकर भी सर्वसाधारण, निम्नवर्ग का साथ न छोड़ सके। 'भिक्षुक' कविता में वे कान्तिहीन, निष्प्रभ, लकुटिया टेकने को मजबूर भिखारी को अपनी समस्त संवेदना व ओज (शक्ति) का समर्पण करते हैं।

भिक्षुक भोजन की लालसा में तृप्त वर्गों के समक्ष अपनी अतृप्ति का प्रदर्शन करते हुए फटी झोली

फैलाए खड़ा है। झोली फटी है शायद जो दिया जाए उसे भी संभाल पाने की क्षमता भी उसमें नहीं है पर फिर भी पछताते तरसते वह पुन: पुन: उसी पथ पर चला आता है। समस्या विकराल है और फिर वह अकेला भी नहीं, उसके साथ पूरा परिवार है जो इस निर्धन स्थिति में रहने के लिए विवश है। निराला व्यंग्योक्ति करते हुए 'दाता-भाग्य विधाता' का जिक्र करते हैं क्योंकि वह जानते हैं कि 'दाता भाग्य विधाता

' कहीं भी नहीं है। यदि होता तो क्या आधे समाज को ऐसी विपन्न स्थिति में यूँ ही मरने के लिए छोड़ देता?

निराला की सूक्ष्म दृष्टि यह देख और परख रही है कि सामाजिक विषमता की गहरी खाई विभिन्न वर्गों के बीच फैल चुकी है। ऐसे में भी निराला अपने जीवन का समस्त अमृत तत्व उन्हें समर्पित करते है, उनके दुख को अपने भीतर स्थान देते हैं। ताकि संवेदनहीन समाज के भीतर रहते हुए भी थोड़ी सी संवेदना उस वर्ग को दी जा सके।

निराला सदैव उपेक्षित वर्गों के साथ खड़े रहे और इसका मूल्य भी उन्होंने चुकाया। चारों ओर से व्यंग्य-वाणों को सुनना, उपेक्षा और तिरस्कार का जीवन भर मिलने वाला अनुभव उन्हें प्राप्त हुआ परन्तु फिर भी उन्होंने हार नहीं मानी तथा सदैव वंचितों और शोषितों का साथ दिया।

मैं अकेला:- (प्रतिपाद्य/संवेदना)

जीवन भर व्यंग्योक्तियों और उपेक्षाओं को सहते युग प्रवर्तक निराला भी अक्षम, असहाय अनुभव करने लगे थे। विडम्बना की बात है कि जिन रचनाकारों को आज युग प्रवर्तक, नए समाज, साहित्य की सृष्टि करने वाला मानकर उनकी उपासना की जाती है, उनके अपने काल में उन्हें उपेक्षा, तिरस्कार के अतिरिक्त कुछ न मिला।

निराला ने मृत्यु को अपनी किशोरावस्था से ही बहुत समीप से देखा। पत्नी मनोहरा की मृत्यु, पिता की मृत्यु, भाई की मृत्यु और 19 वर्ष की अवस्था मे चार भतीजों और अपने पुत्र-पुत्री के पालन-पोषण की जिम्मेदारी। परन्तु इन जिम्मेदारियों को भी यथा सम्भव उन्होंने निभा दिया। बेटी सरोज की आयु के उन्नीसवें वर्ष में होने वाली मृत्यु ने उन्हें झकझोर कर रख दिया। आर्थिक अभाव के कारण वे पुत्री का अंतिम समय में पूर्णोपचार भी न करवा सके।

निराला के समीप अनेक मित्रों की महफिलें थी परन्तु निराला की आर्थिक तंगी में कभी कोई साथ खड़ा दिखाई नहीं दिया। ऐसे में कवि को प्रतीत होता है मानो अब जीवन की संध्या निकट है जहाँ कोई साथ नहीं होता। यहाँ साहित्यिक जीवन में विविध रचनाओं के अस्वीकार्य की निराशा और पारिवारिक दुखानुभूति एक साथ मिलकर अपने चरम पर पहुँच गई है। निराशा का संघर्षशील व्यक्तित्व भी यहाँ निराश व पराजित दिखाई देता है।

यह निराशा आयु के बढ़ने या वार्द्धक्य की देन नहीं है बल्कि संघर्षों के थपेड़े सहते-सहते अकेले रह जाने

की घनीभूत पीड़ा से उपजी है। जयशंकर प्रसाद जी ने अपने संग्रह 'आँसू' में भी ऐसे ही भाव प्रकट किए हैं-
मस्तक में जो पीड़ा घनीभूत थी छाई,
दुर्दिन में आंसू बनकर वह आज बरसने आई।
निराला के जीवन में तो 'दुख ही जीवन की कथा रही' ऐसे में भी वह यह सब देखकर हंस देते हैं और अकेलेपन को ही अनिवार्य नियति मान लेते हैं।

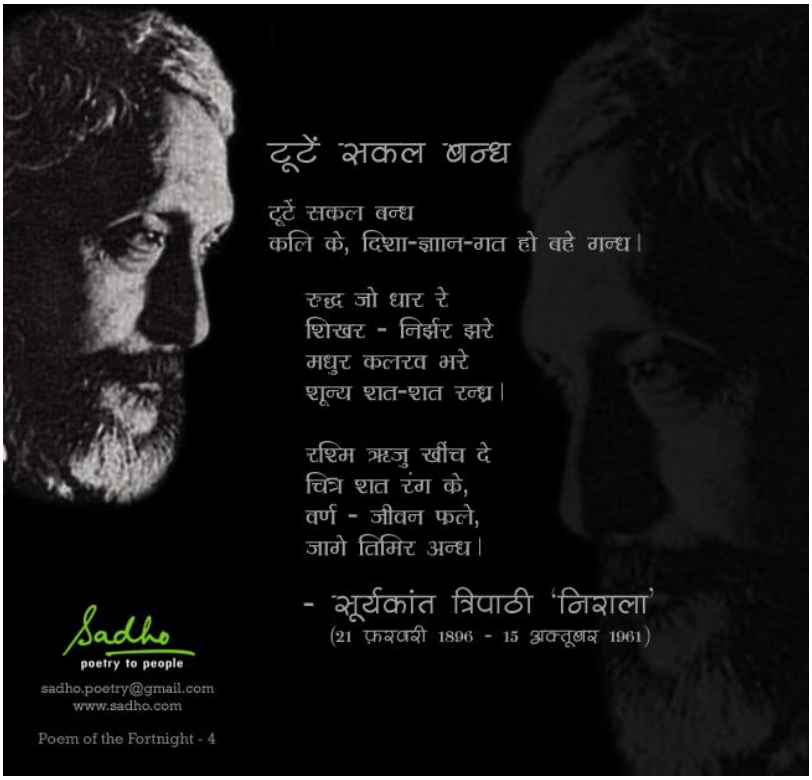

भाषा:-

निराला की काव्य भाषा में संस्कृत के प्रयोगों से लेकर उर्दू के, साधारण बोल-चाल के शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। नन्द दुलारे वाजपेयी (लेख 'काव्य भाषा' पुस्तक 'निराला' इन्द्र नाथ मदान से संग्रहित) ने निराला की काव्यभाषा को निम्न श्रेणियों में विभाजित किया है-

i) **सामासिक पदावली**: - संस्कृत बहुल भाषा का प्रयोग है। निराला ने विभिन्न रसों की व्यंजना के लिए इसका प्रयोग किया है। राम की शक्ति पूजा, यमुना के प्रति इसके सुन्दर उदाहरण है। राम की शक्ति पूजा औदात्य व संघर्ष की अन्यतम रचना है।

ii**) हिन्दी व संस्कृत की पदावली का समान रूप से प्रयोग**:- निराला ने श्रृंगार वीर रस से जुड़ी अनेक कविताओं में इसका प्रयोग किया हे। 'जागो फिर एक बार' में निराला ने संस्कृत शब्दावली व हिन्दी का समान प्रयोग करके ओज गुण का संचार किया है, जो स्वाधीन वृत्ति के भाव जको प्रेषित करता है।

iii) **विशुद्ध खडी बोली की रचनाएँ** :- निराला की अनेक रचनाएँ विशेषकर 'कुकुरमुत्ता' 'नये पत्ते', 'भिक्षुक' खड़ी बोली में ही लिखी गई है। सामाजिक चेतना तथा प्रार्थना परक रचनाएँ खड़ी बोली में ही लिखी गई हैं। निराला को हिन्दी से विशेष प्रेम था और वे सदैव इसका प्रचार-प्रसार करना चाहते थे। हिन्दी की साहित्यिक क्षमता पर उन्हें सदैव विश्वास था। वे 'परिमल' की भूमिका में लिखते हैं _____ "हिन्दी के हृदय में खड़ी बोली की कविता का हार- प्रभात की उज्जवल किरणों से खूब ही चमक उठता है, इसमें कोई सन्देह नहीं---------- हिन्दी के प्राचीन साहित्य के साथ तुलना करने पर प्रान्तीय कोई भाषा नहीं टिकती और उसका नवीन साहित्य भी क्रमश: पुष्ट ही होता जा रहा है-------।" (परिमल की भूमिका: निराला)

iv) **हास्य व व्यंग्य का प्रयोग** :- कुकुरमुत्ता में ऐसे अनेक प्रयोग मिलते हैं।

v**) प्रयोगात्मक** :- अनेक रचनाओं में निराला ने प्रयोग भी किए हैं यथा 'बेला' में विविध भाषाओं के छन्दों का प्रयोग।

निराला ने काव्यरूप के तहत गीत, प्रगीत, आख्यान नाटक तथा गीति-नाट्य का प्रयोग किया है। निराला ने अपने सभी काव्य रूपों में संगीत को विशेष महत्व दिया है। 'भिक्षुक' एक सुन्दर 'प्रगीत' का उदाहरण है जहाँ एक ही भाव या दृश्य को उकेरा गया है।' जागो फिर एक बार' भी प्रगीत रूप में लिखा गया है।

निराला मुक्त छन्द के प्रयोगकर्ता थे। अनेक आलोचकों ने मुक्त छन्द को 'खड़ चन्द' या 'केंचुआ छन्द' कहकर इन्हें अपमानित करने का प्रयास किया। निराला ने 'परिमल' की 'भूमिका' में लिखा-

"मुक्त छन्द तो वह है जो छन्द की भूमि में रहकर भी मुक्त है।----- मुक्त छन्द का समर्थक उसका प्रवाह ही है। वही छन्द सिद्ध करता है और उसका नियम राहित्य उसकी मुक्ति।'

निराला ने स्वयं परिमल की रचनाओं के तीन खण्ड किए-

प्रथम: समसामयिक सान्तयानुप्रास कविताएँ,

द्वितीय: विषय मात्रिक सान्त्यानुप्रास कविताएँ,

तृतीय: स्वच्छन्द छन्द।

निराला इस स्वच्छन्द छन्द को ही हिन्दी का जातीय छन्द मानते हैं। मुक्त छन्द में निराला ने जिस सुन्दरता से कोमल भाव व्यंजित किए हैं उतनी ही तीव्रता से वीरता के भाव भी प्रकट हुए हैं-

जागो फिर एक बार।
समर में अमर कर प्राण
गान-गाए महासिन्धु-से
सिंधु-नद-तीरवासी।

निराला ने 'योग्य जन जीता है' कहकर बार-बार मनुष्य और काव्य की योग्यता को ही प्रामाणिक माना है। संगित, व्यंग्य, हास्य आदि के साथ कविता की मुक्ति को ही काव्य की योग्यता के

रूप में उन्होने स्थापित किया। निराला नवीन सर्जनाओं के कवि हैं। उनका यह नयापन भाषा-शिल्प के क्षेत्र में भी दिखाई देता है। 'राम की शक्ति पूजा में छन्द का प्रयोग इतना विशिष्ट बना कि उसे 'शक्ति पूजा छन्द' ही कहा जाने लगा। रूढ़ियों के विरुद्ध खड़ा निराला का साहित्य संवेदना व शिल्प दोनों ही स्तरों पर विशिष्ट है।

5-विवेचन:-

निराला के काव्य विकास की प्रतिध्वनियाँ इन कविताओं में देखी जा सकती हैं- स्वाधीन होने की छटपटाहट और आग्रह, प्रगतिशील चेतना और निम्नवर्ग को अपनी संवेदना व ऊर्जा का समर्पण, और अंत में अकेले रह जाने की पीड़ा। यह तीन काव्य यात्रा के ही चरण नहीं है बल्कि निराला के जीवन संघर्ष के भी तीन चरण हैं अत: इनका महत्व इस दृष्टि से भी माना जाना चाहिए।

निराला की रचनाएँ मानवतवादी मूल्यों की प्रतिस्थापना पर बल देती हैं। मानव के समर्थन में अपना सशक्त स्वर मुखरित करता इनका काव्य व्यक्ति और समाज के सम्बन्ध पर भी बात करता है। निराला परम्परागत आभिजात्य का विरोध करके जन साधारण को अपने काव्य में प्रतिष्ठित करते हैं।

सुविधाजीवी, सुरक्षित, सम्पन्न समाज के विरूद्ध् होकर वह गली, मोहल्ले, बाजार, खेतों में अपना खून बहाने वाले साधारण श्रमजीवी के प्रति अपनी पक्षधरता की घोषणा करते हैं।

निरला के काव्य में अनुभूतिशीलता हे जो कल्पना व स्वप्न के माध्यम से प्रकट होती है। देश की पराधीनता के विरोध में सम्पूर्ण अनुभूति का समर्पण करके निराला ने सुषुप्त भारतीयों को जागृत किया है। अपनी निजता और राष्ट्रीय संघर्ष का समन्वय करके निराला ने मनुष्यों की मुक्ति को सर्वाधिक महत्व प्रदान किया है।

निराला के काव्य में प्रकृति का अत्यन्त सर्जनात्मक, सुन्दर, व्यंजनात्मक प्रयोग हुआ है। 'जुही की कली' से लकर 'राम की शक्ति पूजा' तक और 'जागो फिर एक बार' में भी प्रकृति अनुभूति की सम्प्रेषक बनकर आई है। प्रकृति के उपादान, श्रृंगारी व्यंजनाओं के ही वाहक न होकर जागृति के स्वप्न दर्शन के वाहक भी बने हैं। अस्ताचल की ओर ढलते रवि, जगती हुई यामिनी गंधा, खिले फूल, सहृदय समीर सभी प्रकृति के ही विविध रूप हैं जो युवा मन को निरन्तर सृजन के लिए, स्वाधीन वृत्ति की प्राप्ति के लिए प्रेरित करते हैं।

6-निष्कर्ष:-

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि निराला की इन तीनों कविताओं में प्रकृति, स्वाधीनता, वीरता, सौन्दर्य, संवेदना आदि विषयों का वैविध्य दिखाई देता है। परिस्थितियों की विषमता से युवा पीढ़ी को बाहर निकालने का प्रयास, वहीं परिस्थितियों का वैषम्य उनके अपने जीवन पर हावी होते दिखाई देना और इन दोनों के मध्य बिना किसी विचारधारापरक आग्रह के उदात्तता व दिव्यता के साथ भिक्षुक की समस्त पीड़ा को दूर करने का प्रयास दिखाई देता है। 'निराला' संघर्षशीलता के कवि हैं। निराला के जीवन संघर्ष की पीड़ा निजता से सामूहिकता में परिवर्तित होती गई है। यही कारण है कि इनका काव्य 'पराजय' का काव्य नहीं है। 'भिक्षुक' की जो करुणा है वह 'तोड़ती पत्थर' में 'अशेष समर' मे बदल गई है। निराला 'समर' का आह्वान करते है, समर में रत होते हैं और विजय' का अप्रतिहत विश्वास दिलाते हैं। यही कारण है कि निराला की संघर्षशील चेतना प्रत्येक पाठक के भीतर उत्साह भरने में सक्षम है।

7-संवाद के बिन्दु:-

1. निराला किस प्रकार निराला बने? अर्थात् उन्हें अपना उपनाम 'निराला' कहाँ से प्राप्त हुआ?
2. आपने निराला की विविध रचनाएँ पढ़ी होंगी? कौन सी रचना निराला के व्यक्तित्व को सबसे अधिक उजागर करती हुई प्रतीत हुई?
3. निराला छायावाद का अतिक्रमण करके जिन रचनाओं की सृष्टि करते हैं उन रचनाओं में निराला का कौन सा रूप दिखाई देता है?
4. 'निराला संघर्षशील और विद्रोही कवि थे' क्या आप इस कथन से सहमत हैं?
5. निराला और कबीर में क्या आपको कोई समानधर्मिता दीख पड़ती है?
6. ऐसा क्यों है कि युग प्रवर्तक कवियों को भी आर्थिक विपन्नता और उपेक्षा के दौर को सहना पड़ता है? निराला के अतिरिक्त ऐसी स्थिति का सामना करने वाले अन्य रचनाकारों की भी खोज करें।
7. निराला की प्रथम मुक्त छन्द में रचित रचना कौन सी थी?
8. निराला ने बंगाल के किस प्रसिद्ध रचनाकार को केन्द्र में रखते हुए आलोचना लिखी?
9. 'जागो फिर एक बार' कविता में 'योग्यजन जीता है' से कवि क्या कहना चाहता है।
10. 'जागो फिर एक बार' कविता प्रकृति के माध्यम से हमें क्या संदेश देती है?
11. जागो --------' कविता में कवि ने गुरू गोविन्द सिंह का उल्लेख क्यों किया है?
12. जागो-------' कविता की समकालीन समय में क्या प्रासंगिक हो सकती है?
13. 'भिक्षुक' कविता में निराला ने 'अभिमन्यु' कहकर 'भिक्षुक' को क्यों सम्बोधित किया है?
14. 'मैं अकेला' कविता में कवि निराशा और अकेलापन क्यों अनुभव करता है?
15. निराला ने 'मुक्त छन्द' की क्या विशिष्टता मानी है और किस रचना में इसके वैशिष्ट्य का प्रतिपादन किया है?

8-रचनात्मक योगदान:-

आशा है कि 'निराला' के व्यक्तित्व और कृतित्व का एक संक्षिप्त परिचय आपको अवश्य ज्ञात हो गया होगा। क्या आप जानते हैं कि निराला ने पत्रकारिता एवं अनुवाद कार्य भी किया है? साहित्य की विविध विधाओं में इनकी रचनात्मकता को देखा जा सकता है। यूँ तो प्रत्येक रचनाकार अपने आस-पास से अपने पात्रों की रचना हेतु प्रेरणा प्राप्त करता है परन्तु निराला ने अपने जीवित समान नाम धर्मा पात्रों को वास्तविक जीवन से प्राप्त किया और उन पर रचनाएँ लिखी। आप पुस्तकें पढिये और ढूंढिये कि निराला ने अपने गद्य साहित्य में किन-किन ऐसे पात्रों को चुना? यदि आपको भी कोई पात्र ऐसा अपने आस-पास दिखे तो उस पर लिखिए रचना और हमें भी भिजवाइए।

9-संदर्भ ग्रन्थ:-

1. निराला: आत्महन्ता आस्था: दूधनाथ सिंह

2. निराला की कविताएँ मूल्यांकन और मूल्यांकन : स० परमानंद श्रीवास्तव
3. निराला नवमूल्यांकन : रामरतन भटनागर
4. निराला की साहित्यसाधना: रामविलास शर्मा
5. निराला: इन्द्रनाथ मदान
6. निराला की दो लम्बी कविताएँ: डॉ० जगदीश प्रसाद श्रीवास्तव।